Timax®

मधुर हिंदी

NEP 2020
ENHANCED EDITION

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

6

मधुर हिंदी–6

अध्याय–1. फ़ाल्गुन में सावन

1. (क) वर्षा होने के कारण पेड़ों की डालियों पर यौवन आने लगा। **(ख)** बसंत ऋतु में प्रकृति हरी–भरी और फूलों की सुगंध से सुगंधिता हो जाती है। **(ग)** पुतलियों में हरियाली का रस थिरकने लगा। **2. (क)** फ़ाल्गुन का महीना स्वयं ही आनंद से भरा होता है। समशीतोष्ण जलवायु में होली पर्व का आनंद अनूठा होता है। यदि ऐसे समय में वर्षा भी अपनी कृपा कर दे, तो यह आनंद दोगुना हो जाता है। **(ख)** प्रस्तुत पंक्ति फाल्गुन में वर्षा हो जाने पर हमारे मन में प्रकृति में पुन: हरे–भरे वातावरण होने की अभिलाषा जग उठती है। **(ग)** यहाँ तुम्हारा का प्रयोग वर्षा के लिए किया गया है। प्राय: दुख के बाद आने वाले सुख का आनंद आत्यधिक होता है ठीक उसी प्रकार प्रत वातावरण में वर्षा होने पर अत्यधिक आनंद होता है। **3.** (क) धूल (ख) कजली (ग) वर्षा **भाषा की बात–1. सुबह**–प्रात:, भोर, सवेरा, **आँख**–नेत्र, चक्षु, नमन, **जल**–नीर, तीव्र, पानी, **मिट्टी**–मृदा, भू, भूमि, **अलि**–भँवरा, सखि, काक **2.** सुबह, शाम, कल, आकाश, गई, जाग्रत **3.** दर्शन, ट्रंक, फ़िक्र, वर्ष, चंद्रमा, ग्रहण **4.** स्वयं करें। **5.** फूल, रौनक, धन, अलियों, बना, काजल।

अध्याय–2. मुझे स्कूल अच्छा लगा

1. (क) सखि स्कूल के गेट को देखकर तो लो चान ने कहा, "अरे यह गेट तो बढ़ रहा है," तोत्तो–चान ने कहा। "यह बढ़ता जाएगा और एक दिन शायद टेलीफोन के खंभे से भी ऊँचा हो जाएगा।" **(ख)** हेडमास्टर जी का दफ़्तर रेलगाड़ी के डिब्बे में नहीं था। वह दाहिने हाथ की ओर एक मंज़िले भवन में था। वहाँ पहुँचने के लिए सात अर्ध–गोलाकार पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती थीं। **(ग)** तोत्तो–चान ने धीरे से कहा, "तुमने कहा था कि वे हेडमास्टर हैं, पर अगर वे इन सारे रेलगाड़ी के डिब्बों के मालिक हैं, तो वे स्टेशन मास्टर हुए न।" **(घ)** वह चार घंटे लगातार बोलती रह गई। **2. (क)** अब तक जिस स्कूल में वह जाती रही थी, उसका गेट सीमेंट के दो बड़े खंभों का बना था और गेट पर बड़े–बड़े अक्षरों में स्कूल का नाम लिखा था, पर इस स्कूल का गेट तो पेड़ के दो तनों का था। उन पर टहनियाँ और पत्ते भी थे। **(ख)** वहाँ स्कूल के कमरों की जगह रेलगाड़ी के छह बेकार डिब्बे काम में लाए जाते थे। तोत्तो–चान को लगा, ऐसा तो सपनों में ही होता होगा। रेलगाड़ी में स्कूल! उसे स्कूल बहुत अच्छा लगा। **(ग)** उसने हेडमास्टर जी को बताया, कि जिस ट्रेन पर चढ़कर वे

आए थे, वह कितनी तेज़ी से चली थी, उसने बताया कि उसने टिकट बाबू से कहा था कि उससे टिकट न लें, पर उन्होंने उसकी बात नहीं मानी, उसने बताया कि उसके दूसरे स्कूल की शिक्षिका कितनी सुंदर है, अबाबील का घोंसला कैसा है, उसका भूरा कुत्ता रॉकी कैसे-कैसे करतब दिखा सकता है, उसने बताया कि वह कैंची मुँह में डालकर चलाया करती थी, पर उसकी शिक्षिका ने उसे ऐसा करने से मना किया था, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं तोत्तो-चान की जीभ न कट जाए, पर वह फिर भी वैसा करती रही, उसने बताया कि उसके पापा कितने अच्छे तैराक हैं और वे गोता भी लगा सकते हैं। वह लगातार बोलती गई। **(घ)** असल में उसके कपड़े इसलिए फटते थे, क्योंकि वह दूसरों के बगीचों में झाड़ियों के बीच में से घुसती थी। साथ ही, वह खाली ज़मीन के चारों ओर लगे कँटीले तारों के नीचे से भी घुसती थी। (ङ) तोत्तो-चार को इस प्रकार निकलते देख माँ की आँखें अचानक भर आईं। कितना कठिन था यह मानना कि उसकी चुलबुली बिटिया, जो आज इतनी खुशी से इस स्कूल में जा रही है, हाल ही में एक स्कूल से निकाली जा चुकी थी। उसने दिल से प्रार्थना की, कि इस बार सब शुभ हो। **3.** (क) पेड़ का (ख) रेलगाड़ी के डिब्बों की (ग) वायलिन (घ) पचास **4.** (क) ✓ (ख) ✔ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗ **भाषा की बात–1.** विद्यालय, फाटक, वृक्ष, स्वप्न, जननी, डर **2.** दुखी, गलत, अविश्वास, घटना, अशुभ, अशिष्टता **3.** स्वयं करें।

अध्याय–3 नमक का दरोगा

1. (क) पूर्णमासी का चोंद **(ख)** यमुना नदी **(ग)** कालाबाजारी **2. (क)** उन्होंने कहा था, "बेटा! घर की दुर्दशा देख रहे हो। हम ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ, न जाने कब मेरा अंतिम समय आ जाए। अब तुम्हीं घर के मालिक हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना। ऐसा काम ढूँढना, जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है, जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी उन्नति होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ?" **(ख)** पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मीजी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे, 'कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है'। **(ग)** वंशीधर ने घर में आने वाली लक्ष्मी को नकार दिया था। उसने अच्छी-खासी ऊपरी आमदनी को लेने से मनाकर

दिया था। **(घ)** उसने कहा, "हमारा भाग्य उदय हुआ, जो आपके चरण इस द्वार पर आए। आप हमारे पूज्य देवता हैं, आपको कौन-सा मुँह दिखाएँ, मुँह पर तो कालिख लगी हुई है। किंतु क्या करें, अभागा कपूत है, नहीं तो आपसे क्यों मुँह छिपाना पड़ता? ईश्वर चाहे निःसंतान रखे, पर ऐसी संतान न दे।" **(ङ)** मुंशी वंशीधर ने उस कागज़ को पढ़ा, तो कृतज्ञता से उनकी आँखों में आँसू भर आए। पंडित अलोपीदीन ने उनको अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त किया था। छह हज़ार वार्षिक वेतन के अतिरिक्त रोज़ाना खर्च अलग, सवारी के लिए घोड़ा, रहने को बँगला, नौकर-चाकर मुफ़्त। **3.** (क) नमक (ख) लक्ष्मी पर (ग) चालीस हजार (घ) अलोपीदीन **4.** (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ **भाषा की बात–1.** (क) असंभव (ख) साप्ताहिक (ग) आज्ञाकारी (घ) कर्तव्यनिष्ठ (ङ) वार्षिक **2.** स्वयं करें।

अध्याय–4. तमिलनाडु

1. (क) तमिलनाडु का **(ख)** रामेश्वरम् में अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी के संगम पर कन्याकुमारी मंदिर है। **(ग)** यहाँ की विभिन्न प्रकार की भू संरचनाओं के कारण **(घ)** नारियल और केले के वृक्षों की कतारें हैं, तो कहीं आम और काजू के बगीचे। पहाड़ियाँ चाय और कॉफ़ी के बागानों से ढकी हुई हैं। **2. (क)** यहाँ रेत के अलग-अलग रंग देखने को मिलते हैं। मंदिरों की प्रचुरता है, इसी कारण इसे 'मंदिरों का राज्य' भी कहा जाता है। **(ख)** यहाँ के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल कन्याकुमारी तथा रामेश्वरम् हैं। रामेश्वरम् में अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी के संगम पर कन्याकुमारी मंदिर है। **(ग)** तमिलनाडु में मुख्य व्यवसाय कृषि है। **(घ)** यहाँ के निवासी सीधे-सादे, परिश्रमी, ईमानदार तथा व्यवहार-कुशल होते हैं। **(ङ)** यहाँ के लोगों का मुख्य त्योहार 'पोंगल' है। यह फ़सल की कटाई का त्योहार है। जनवरी माह में किसान अपनी अच्छी फ़सल के लिए आभार प्रकट करने हेतु सूर्य, इंद्र पृथ्वी और पशुओं की पूजा करते हैं। **3.** (क) दक्षिण (ख) 130 (ग) 22 (घ) पोंगल (ङ) कृषि **4.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓ **भाषा की बात–1.** मूर्तियों, महीने, मछलियों, साड़ियों, कतारें, दीवारें, रस्सियाँ, संस्कृतियाँ, फ़सलें, झीलें। **2.** शाब्दिक, भारतीय, प्राकृतिक, पर्वतीय, धार्मिक, शास्त्रीय, लौकिक, सुंदरता, सांस्कृतिक, भव्यता **3.** (क) मंदिर (ख) स्थल (ग) दृश्य (घ) लकड़ी

अध्याय–5. मनुष्यता

1. (क) जो आलस वश कर्म नहीं कर पाते उसे कवि ने भाग्यहीन कहा है। **(ख)**

सतत् कर्मशील व्यक्ति ही सच्चा मनुष्य है। **(ग)** कवि विपत्ति और विघ्नों से न डरने के लिए कहा है **2. (क)** मनुष्य दूसरों के लिए मरता है लेकिन पशु स्वयं के लिए। **(ख)** जो अपने लिए नहीं जाता है उसे मरा हुआ नहीं समझना चाहिए। **(ग)** मनुष्य को परोपकारिता का गुण पर गर्व करना चाहिए। **(घ)** मनुष्य को हमेशा भलाई करने हेतु तत्पर रहना चाहिए। **(ङ)** इस कविता में कवि ने लोगों को मनुष्य की भलाई के लिए स्वयं को न्यौछावर करने की प्रेरणा दी है। कवि के अनुसार दूसरों के लिए जीने वाला व्यक्ति सच्चा मनुष्य है। केवल अपने लिए जीने वाला व्यक्ति पशु के समान है। **3.** (क) दूसरों के (ख) पशु प्रवृत्ति का (ग) सनाथ (घ) सहयोग करना (ङ) सतर्क **भाषा की बात–1. दीनबंधु**–दीनानाथ, ईश्वर, ईश **मार्ग**–रास्ता, पथ, बाट, **मनुष्य**–मानव, लोग, जन, **पशु**–जानवर, जीव, चौपाया, **गर्व**–घमंड, दर्प, अहं **2.** मनुष्य, जीवन, विनम्र, निष्ट, असमर्थ, अनाथ, क्रूर, अभाव। स्वयं करें।

अध्याय–6. नीम हकीम खतरे जाँ

1. (क) लोगों को बीमार देखता, तो मेरी बड़ी इच्छा होती कि किसी दिन मैं भी बीमार पड़ता। **(ख)** बारह पूरियाँ और आधापाव मलाई और छः रसगुल्ले। **(ग)** सरकारी अस्पताल के डॉक्टर, डॉक्टर चूहानाथ कातर जी, वैद्य जी और हकीम साहब **(घ)** छियानवे रुपये । **2. (क)** जो भी व्यक्ति आता एक–न–एक नुस्खा अपने साथ लाता था। किसी ने कहा, "अजी! कुछ नहीं, हींग पिला दो।" किसी ने कहा, "चूना खिला दो।" आदि **(ख)** वे बोले, "वैद्यजी ने बड़े गौर से पत्रा देखा और कहा कि अभी डेढ़ घड़ी एकादशी का योग है। उसके समाप्त होने पर चलूँगा।" इसलिए उन्हें देरी हो गई। **(ग)** ऐसा तो न था, कि बीमार होने पर दिन में दो बार बुलेटिन निकलते, पर इतना अवश्य था कि मेरे बीमार पड़ने पर 'हंटले के बिस्कुट'–जिन्हें साधारण अवस्था में घर वाले खाने नहीं देते, खाने को मिलते और सबसे बड़ी इच्छा तो यह थी, कि दोस्त लोग आकर मेरे सामने बैठते और गंभीर मुद्रा धारण कर पूछते–"कहिए श्रीमान जी, कैसी तबीयत है? किसकी दवा हो रही है? कुछ फ़ायदा है?" **(घ)** सूट तो ऐसा पहने हुए थे, कि मालूम पड़ता था प्रिंस ऑफ़ वेल्स हैं। **(ङ)** वैद्यजी 'चरक', 'सुश्रुत' के श्लोक सुनाने लगे और अंत में बोले, "देखिए, मैं दवा देता हूँ और अभी लाभ हो जाएगा।" **(च)** वे बोलीं, ''तुम्हारी बुद्धि कहीं घास चरने गई है? आज कोई कहता है– दाँत उखड़वा लो, कल कोई कहेगा– सारे बाल उखड़वा डालो, परसों कोई डॉक्टर कहेगा– नाक नुचवा लो, आँख निकलवा लो। ये सब फ़िज़ूल की बातें हैं।

खाना ठीक से खाओ। पंद्रह दिन में ठीक हो जाओगे।'' **3.** (क) हंटले के बिस्कुट खाने की (ख) हॉकी (ग) अमृत धारा (घ) ताँगे से (ङ) दाँतों से **4.** (क) पत्नी ने, लेखक से (ख) सरकारी डॉक्टर ने, लेखक से (ग) लेखक ने, एक सज्जन से (घ) लेखक ने, हकीम से (ङ) लेखक की पत्नी ने, लेखक से **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–7. भगत सिंह का पत्र

1. (क) सामान्य लोग **(ख)** भगतसिंह की माँ को भगत सिंह की मुलाकात से तबीयत नहीं भरी। **(ग)** भगत सिंह ने अपने भाई कुलबीर सिंह को **(घ)** यह पत्र भारत के युवा वर्ग को देश प्रेम, त्याग और बलिदान की भावना सिखाता है। **2. (क)** भगत से मुलाकात करने हेतु **(ख)** दुनिया में अनेक लोगों के पास भी अनेक मुसीबतें होती है। उनका साहस के साथ सामना करना चाहिए। **(ग)** हिंदुस्तानी माताएँ अपने बच्चों को भगत सिंह जैसा बनाना चाहेंगी। **(घ)** हाँ, एक विचार भी मेरे मन में आता है, कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हज़ारवाँ भाग भी पूरा नहीं कर सका, अगर स्वतंत्र ज़िंदा रह सकता, तब शायद इन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरत पूरी कर सकता। **3.** (क) कुलबीर सिंह (ख) सेंट्रल जेल (ग) 23 मार्च का **4.** (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ **भाषा की बात–1.** प्रार्थना, मृत, निराशा, आजाद, सुख, मृत, शांति, परतंत्र **2.** (क) आहट = घबराहट (ख) आहट = जगमगाहट (ग) आहट = टकराहट (घ) आहट = कड़वाहट (ङ) आहट = छटपराहट **3. पत्र**– चिट्टी, खत, संदेश; **भाई**– भ्राता, बंधु, सहोदर; **माँ**– जननी, अम्ब, माता; **हिंदुस्तान**– जंबूद्वीप, आर्यावर्त, भारत; **मानव**– मनुज, मनुष्य, जन

अध्याय–8. हमारी वन-संस्कृति

1. (क) जब तक समस्त जीवन को एक रूप में देखने की कला हम फिर से नहीं सीखेंगे, तब तक हममें न राष्ट्रीय आत्मविश्वास आएगा और न इस भयंकर परिस्थिति से पार उतरने की शक्ति आएगी। **(ख)** अतीत में भारत में कभी भी अन्न की कमी नहीं थी। भारत धन–धान्य से समृद्ध था। **(ग)** आज सभी भारतीय–हृदयों में असंतोष भरा है, क्योंकि हमारे पास खाने को पर्याप्त नहीं। हमारे पास अन्न नहीं है, क्योंकि पानी संग्रह करने की पुरानी पद्धति हम सुरक्षित नहीं रख सके। हमारे पास पानी नहीं है, वर्षा अनिश्चित है; क्योंकि हम वृक्ष–महिमा भूल गए हैं। **(घ)** पुत्र और वृक्ष में भी भेद है। पुत्र को हम स्वार्थ के कारण जन्म देते हैं; परंतु वृक्ष को हम परमार्थ के लिए उगाते

हैं। **2. (क)** आज वृक्षों की न्यूनता हमारे सामने तांडव कर रही है। जो धरती माता अभी तक सुजलां, सुफलां, शस्यश्यामलां थी, वह क्षीण हो गई है। अपनी संतान को भी वह खिला नहीं सकती, क्योंकि जो हमारी सांस्कृतिक प्रणाली है, उसको नवीन दृष्टि से देखने की शक्ति हममें नहीं रही। किंतु यह बात निश्चित रूप से समझिए, कि इस शक्ति के बिना हम जीवन में टिक नहीं सकेंगे। **(ख)** धरती पर वृक्षारोषण करके इसे स्वर्ग बना सकते हैं। **(ग)** ऋग्वेद, जो हमारी सनातन शक्ति का मूल है, वन-देवियों की अर्चना करता है। मनुस्मृति में वृक्ष काटने वाले को बड़ा पापी माना गया है। उसके लिए दंड का विधान किया गया है। मत्स्यपुराण में कहा गया है–''जो आदमी वृक्षों को नष्ट करता है उसे दंड दिया जाए।'' **(घ)** वृक्षों के लिए हमारे पूर्वजों में जो प्रेम था, वह हममें भी होना चाहिए। हमें अपनी वन-प्रधान संस्कृति की ओर अभिमुख होना चाहिए। वनों की छाया में हमने जन्म लिया, वृक्षों के पत्तों पर जलकण का जलपान किया। समीर में डोलती हुई पत्तियों में से चंद्रकिरण के साथ नृत्यशाला के प्रथम पाठ पढ़े। इस संस्कृति के मौलिक सिद्धांतों को हम आधुनिक युग में भी ला सकते हैं। **(ङ)** पुराणों में कहा गया है–''दस कुएँ बनवाना, एक तालाब बनवाने के समान है। दस तालाबों का निर्माण एक झील के निर्माण के बराबर है। दस झीलें बनवाना एक सुपुत्र प्राप्त करने के समान पुण्यकारक है, किंतु दस सुपुत्रों का पुण्य केवल एक वृक्ष के लगाने से प्राप्त होता है।'' हमारी संस्कृति में जो सुंदरतम और श्रेष्ठतम है, उसका जन्म आश्रमों और तपोवनों में हुआ था। हमारे संस्कारों पर नंदन-वन की सुंदरता और सती सीता के कारण अशोक-वन के करुणापूर्ण वातावरण की छाप लगी हुई है। वृंदावन को भी हम कैसे भूल सकते हैं, जहाँ श्रीकृष्ण ने अपना संदेश सुनाया था। **3.** (क) ऋग्वेद (ख) वृक्ष (ग) भगवान बुद्ध को (घ) शकुंतला **4.** (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓ **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–9. मैं सबसे छोटी होऊँ

1. (क) श्री सुमित्रानंदन पंत (ख) माँ अपने बच्चों को अपने हाथों से नहलाती, खिलाती, झूला झुलाती, परियों की कहानियाँ सुनाती हैं। (ग) स्नेह पाना चाहते हैं। **2. (क)** इससे किसी का भय नहीं रहता है। **(ख)** पिता की तुलना में माँ अधिक ममतामयी होती है। **(ग)** क्योंकि वे अब माँ पर अश्रित नहीं होते वे अपने कार्य स्वयं करने लगते हैं। **(घ)** उसके सिर पर उसकी माँ का हाथ रहें। **(ङ)** स्वयं करें। **3.** बड़ा बनाकर पहले हमको, तू पीछे छलती है मात! हाथ पकड़ फिर सदा हमारे, साथ

नहीं फिरती दिन-रात! **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-10. खेल, खाना और खुशी

1. (क) बच्चों के हाथों में **(ख)** कमज़ोरों की रक्षा के लिए **(ग)** भगवान श्री कृष्ण में **(घ)** खेल में हम समभाव सीखते हैं तथा अनुशासन का महत्त्व सीखते हैं। **2. (क)** रावण का बल भोग, सुख के लिए था, दूसरों को सताने के लिए था। रावण पहाड़ उठाता था, वज्र तोड़ डालता था, दस आदमियों का बल मानो उसमें अकेले था। इसलिए उसके दस मुँह और बीस हाथ दिखलाए गए। **(ख)** निर्बलों में भी किसी महान उद्देश्य को पाने के लिए बल पैदा हो जाता है। **(ग)** हनुमान मन और पवन के समान वेगवान थे। वे अत्यंत बुद्धिमान थे, वे नायक थे, वे रामदूत थे। इन सारी बातों का वर्णन यह है– हनुमान बल के देवता हैं। ये गुण ही वास्तविक बल हैं। **(घ)** खेलों से हमारे अंदर शक्ति और प्रेम दोनों पैदा होते हैं। सब बच्चे एकत्र होकर एक साथ खेलते हैं। इससे प्रेम का विकास होता है। ये संस्कार जीवन में उपयोगी होते हैं। हम साथ-साथ खेलें, साथ-साथ शक्ति कमाएँ, ज्ञान कमाएँ आदि संस्कारों से ही संघ शक्ति और सहकारिता बढ़ेगी। हमने कसरत की, लेकिन दूध और रोटी न मिली, तो कैसे काम चलेगा? हमें अगर घर पर रोटी नहीं मिलती तो यहाँ आकर कैसे उछल-कूद करते? इस जानते हैं कि घर पर रोटी तैयार है, इसलिए हम यहाँ उछले-कूदे। अन्न उछलने-कूदने की शक्ति देता है। इसी कारण अन्न को ब्रह्म कहा गया है। **(ङ)** खेलों से हमारे अंदर शक्ति और प्रेम दोनों पैदा होते हैं। सब बच्चे एकत्र होकर एक साथ खेलते हैं। इससे प्रेम का विकास होता है। ये संस्कार जीवन में उपयोगी होते हैं। **(च)** भगवान बुद्ध ने कहा, ''आज उसके लिए अन्न ही उपदेश था। आज उसे अन्न की ही सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। वह उसे पहले देना चाहिए। अगर वह जिएगा तो कल सुनेगा।'' **3.** (क) बीस (ख) पशुबल (ग) तीन-चार (घ) गोकुल (ङ) बूढ़े **4.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-11. एलबम

1. (क) लाला सदानंद ऋण चुकाने की **(ख)** कहीं शादीराम को सच्चाई का पता न चल जाए। **(ग)** पाँच सौ रूपये **(घ)** सज्जन व्यक्ति **2. (क)** बंगला, हिंदी और अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाएँ। **(ख)** वे सहसा बोले, ''ये चित्रकला के अच्छे नमूने हैं। अगर किसी शौकीन व्यक्ति को पसंद आ जाएँ, तो आप हज़ार-दो हज़ार रुपए बड़ी आसानी से कमा सकते हैं। **(ग)** उसने लाला सदानंद के 500/रु चुका दिए। **(घ)**

पंडित जी को रोगी के सिरहाने के नीचे कोई चुभती हुई चीज़ जान पड़ी। उन्होंने नीचे हाथ डालकर देखा, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। वह सख्त चीज़ वही एलबम था, जिसे किसी सेठ ने नहीं, बल्कि स्वयं लाला सदानंद ने खरीद लिया था। इसलिए वे आश्चर्य चकित थे। **(ङ)** स्वयं करें। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–12. जीवन का निर्माण

1. (क) विचार **(ख)** अधिकांश व्यक्ति लापरवाह होते हैं। वे अपने विचारों को नियंत्रित एवं प्रशिक्षित करने का प्रयत्न नहीं करते तथा प्रत्येक बात को भाग्य पर छोड़ देते हैं। **(ग)** उच्छृंखल व्यक्ति, जो अपने विचारों को वश में नहीं कर सकते, जो अपनी प्रवृत्तियों तथा चेष्टाओं को नहीं बदल सकते, वे यह जानने का प्रयत्न ही नहीं करते, कि वे किस प्रकार सौंदर्य और संतुलन का, प्रसन्नता और सफ़लता का सृजन कर सकते हैं। उनका मन जिधर जाता है, वे उसे उधर ही जाने देते हैं, उनसे जो भी चेष्टा हो जाए, होने देते हैं। **2. (क)** मैं तो इस आदमी की यहाँ कोई आवश्यकता नहीं समझता। जहाज़ के पाल और मस्तूल ही जहाज़ को आगे ले जाने के लिए पर्याप्त हैं। जब ज़मीन दिखाई देने लगेगी या सामने से कोई दूसरा जहाज़ आता दिखाई देगा, तब इस पतवार को हम प्रयोग में ला सकते हैं। पाल खोल दो और जहाज़ को चलने दो।'' उसकी आज्ञा का पालन किया गया। उसके बाद जो दुर्घटना और विनाश हुआ, उससे कुछ लोग ही बच पाए। **(ख)** अपने चरित्र की काट-छाँट के लिए हमें भी मूर्तिकार की भाँति प्रयत्न करना चाहिए। अपने इर्द-गिर्द के वातावरण को बदलने के लिए हमें भी वैसा ही प्रयास करना चाहिए। हमें यह अवश्य जानना चाहिए, कि हम क्या करना चाहते हैं? और यह भी कि हम उसे कैसे कर सकते हैं? इसके बाद हमें अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए जुट जाना चाहिए और अपने काम को अपनी कल्पना के अनुरूप पूर्ण करने के लिए निरंतर अथक परिश्रम एवं प्रयत्न करना चाहिए। जो अपने विचारों को अपने वश में कर सकता है, वही अपने आदर्श के अनुरूप अपने लक्ष्य को पूरा करने में समर्थ होता है। **(ग)** जीवन के नष्ट होने की संभावना बढ़ जाती है। **(घ)** विचार कोई ठोस वस्तु नहीं, अमूर्त तथ्य है। इसीलिए अधिकांश व्यक्ति समझते हैं कि इन पर हमारा कोई वश नहीं, हम इन्हें इच्छानुसार नहीं चला सकते, हम इन्हें बदल नहीं सकते। साधारणत: लोग यही समझते हैं, कि मन की प्रवृत्तियों को रोकना कठिन तथा निरर्थक कार्य है। वे समझते हैं कि विचारों का अध्ययन करना, मनोवेगों का विश्लेषण करना बहुत कठिन कार्य है और इसके लिए अतिरिक्त समय तथा अनेक पुस्तकों का

अध्ययन आवश्यक है। **(ङ)** प्रत्येक व्यक्ति, भले ही कितना ही अबोध हो, कितना ही अज्ञ हो, कितना ही असंस्कृत हो और कितना ही व्यस्त हो, उसके अंदर इतनी सामर्थ्य अवश्य है, कि वह अपने विचारों को समझ सके, उनका विश्लेषण कर सके, उनकी छानबीन कर सके और प्रत्येक व्यक्ति के पास इतना समय भी अवश्य है, कि वह अपनी बुद्धि के स्वभाव का पुनर्निर्माण कर सके। अपने कार्यकलापों को बदल सके, अपने चरित्र में परिवर्तन ला सके और इस प्रकार अपने शरीर एवं जीवन में वांछित परिवर्तन कर सके। **3.** स्वयं करें। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–13. साँझ के बूढ़े

1. (क) कच्चे एवं साफ–सुथरे **(ख)** सचमुच गाँव बदल गए। लोग बदल गए। आज इतने समय बाद इस रास्ते से गुज़रा हूँ, तो मुझे यह देखकर दुखद आघात लगा है, कि वह कुआँ नहीं रहा। उस पर बोरिंग करके एक पंपिंग सेट का फाउंडेशन खड़ा है। वे लोग नहीं रहे। **(ग)** कवि के अनुसार, सौंदर्य का मापदंड बदलने लोग अपनी आवश्यकता एवं झूठी शान रखने के लिए प्राकृतिक सौंदर्यता और उसकी महत्ता को नहीं समझते। कवि ने इसलिए ऐसा कहा है। **2. (क)** कहाँ लोग नंगे बदन, कुछ गंजी पहने, बैठे हुए बातों में व्यस्त हैं। बातें क्या खत्म होने वाली हैं? **(ख)** ये खाते–पीते किसान परिवार के मोटे–मोटे, सुखी और बूढ़े–अधबूढ़े लोग हैं। **(ग)** झींगुरों की खनकती चीत्कार और चिड़ियों की कलख ध्वनि संधा के सन्नाटे को भंग करते हैं। **(घ)** गाँव का यह अपना ही मौसम बदला है, कि गाँव के कोने पर संध्या के समय कुआँ आबाद करते और यात्रियों का घर पूछते वे बूढ़े नहीं रहे। उन बूढ़ों की बैठकी में गाँव का एक सौंदर्य था। **(ङ)** क्योकि गाँव में संज्ञाकाल कुएं पर एकत्रित होने वाले बूढ़ों से ही गाँव की रौनक होती हैं। **3.** (क) गाँव की (ख) 30–32 वर्ष (ग) बहुत बुरा (घ) हाँ **4.** स्वयं करे। **भाषा की बात**–स्वयं करे।

अध्याय–14. क्षमादान

1. (क) उसे अपनी बीबी सकीना याद आ गई। **(ख)** फज़लू ने बी.ए. पास कर लिया था। कॉलेज में वह खेलकूद में आगे रहता था। सामाजिक कार्यों में भी वह सक्रिय रहता था। इलाके के सभी लोग फज़लू को बहुत मानते थे। **(ग)** ''किसी सिरफिरे ने फज़लू को मार डाला है। **(घ)** फारिश्ते के जैसा **2. (क)** उसने वचन दिया था, ''फजलू को अब आप पालना। उसे नेक इंसान बनाना।'' **(ख)** ''माना कि उस बेरहम ने तेरे बेटे को मारा है। मगर तूने उसे अपने घर में पनाह दी है। शरण में आए

हुए व्यक्ति के साथ धोखा करना पाप है।'' **(ग)** क्योंकि वह एक सच्चा मुसलमान था तथा उसने शरणागत की रक्षा करने का वचन दिया। **(घ)** उसे मालूम हो गया था कि मानवता बहुत बड़ा गुण है। इस गुण के कारण रमज़ान ने मेरी जान छोड़कर मेरी रक्षा की। **3.** (क) फज़लू (ख) नौ महीने (ग) क्षमाशीलता का **4.** (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗ (च) ✗ **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–15. प्लास्टिक प्रदूषण

1. (क) हमारे चारों ओर जो कुछ भी अवस्थित है, वह सब कुछ हमारा पर्यावरण है। **(ख)** जब हमारे बाहरी वातावरण में ऐसे पदार्थ मिल जाते हैं, जो मानव, जीव-जंतु तथा उनके पर्यावरण के लिए खतरनाक बन जाते हैं, तो हम इसे 'प्रदूषण' कहते हैं। **(ग)** प्रकृति ने मनुष्य को अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ दीं और उस पर उनकी रक्षा व संरक्षण का भार सौंपा। लेकिन मनुष्य ने ही पर्यावरण में प्राप्त इन वस्तुओं का दुरुपयोग किया तथा पर्यावरण में असंतुलन को जन्म दिया। इसलिए इसका जिम्मेदार वह स्वयं हैं। **(घ)** शहरों में उत्पन्न प्लास्टिक-कचरे को जलाया नहीं जा सकता। ज़मीन में दब जाने पर यह प्लास्टिक-कचरा, मिट्टी की जल-संरक्षण क्षमता पर बुरा प्रभाव डालता है और मिट्टी पानी को संचित नहीं रख पाती, फलस्वरूप मिट्टी की उर्वरा-शक्ति कम हो जाती है। **2. (क)** प्लास्टिक प्रदूषण का सबसे बड़ा स्रोत है– घरेलू कचरा। घरेलू कचरे में प्लास्टिक के अतिरिक्त, बचे हुए खाद्य-पदार्थ, फल-सब्ज़ियाँ, कागज़, रद्दी अखबार, पुराने वस्त्र, सीमेंट, लकड़ी आदि होते हैं। प्लास्टिक को छोड़कर इन सभी पदार्थों का प्राकृतिक रूप से अपघटन हो सकता है। इसलिए इनसे छुटकारा पाना एक बड़ी समस्या बन गया है। **(ख)** प्लास्टिक से उत्पन्न प्रदूषण को प्लास्टिक प्रदूषण कहते हैं। यह इसका प्राकृतिक रूप से अपधारित नहीं होता है। इसलिए इससे निर्मित प्रदूषण शीघ्रता से दूर नहीं हो पाते। **(ग)** प्लास्टिक से बढ़ रहे इस प्रदूषण को रोकना आवश्यक हो गया है। आज आवश्यकता है, कि हम अपनी जीवन-शैली को बदलें और प्लास्टिक के प्रयोग पर रोक लगाएँ। प्लास्टिक के पुनर्चक्रण को अधिकाधिक बढ़ावा दिया जाना चाहिए। हाँ यह मानव हित में है। **(घ)** प्लास्टिक-कचरा नालों तथा सीवर के रास्ते नदियों में पहुँचकर उन्हें भी प्रदूषित कर रहा है। इस प्लास्टिक-कचरे को निगलकर सैकड़ों मछलियाँ व अन्य जलीय जीव असमय ही मौत के मुँह में समा जाते हैं। प्लास्टिक तथा पॉलिथीन के कारण नदी का प्रवाह भी बाधित होता है। इनके कारण नगरों में सीवर व्यवस्था भी बाधित होती है।

सीवरों का प्लास्टिक-कचरों से जाम होना तथा साधारण-सी बारिश में ही जल-भराव होने की समस्या बड़े शहरों में आम हो गई है। **(ङ)** अभी कुछ वर्ष पहले हम केवल वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण से ही परिचित थे। तब इनमें जुड़ा ध्वनि (शोर) प्रदूषण। और तो और, आधुनिकता और सुख पाने की होड़ में अब हमने एक विशेष प्रकार के प्रदूषण को जन्म दिया है। वह है, प्लास्टिक से उत्पन्न प्रदूषण, जिसे हम संक्षेप में 'प्लास्टिक प्रदूषण' कह सकते हैं। प्लास्टिक प्रदूषण पिछले कुछ वर्षों में बहुत बड़े खतरे के रूप में सामने आया है। **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-16. बदलती हवा

1. (क) घरेलू बातें (ख) क्योंकि वह लगान चुकाना पृण्य का काम समझता था। (ग) पंच मुस्कराकर कहने लगे, ''तब तो यह न्याय तेरे अपने मुँह से ही हो गया कि तेरी मेहनत का फल तुझे ही मिलना चाहिए।'' **2.** (क) कलश देने के लिए (ख) वह कलश नहीं रखना चाहता था। (ग) किसान ने भी सख्ती से ज़वाब दिया, ''ज़मीन तुम्हारी है, इसलिए लाया। आँखें दिखाने की ज़रूरत नहीं। मुझे काम के लिए देरी हो रही है। शराफ़त से चुपचाप कलश स्वीकार करके मुझे जाने दो। लगान वाली बात निभ गई, वो ही बहुत है।'' (घ) उसके बाद समय की ढलान पर, समय की हवा, निरंतर बहती गई। हवा के उन थपेड़ों के आगे न तो वह किसान रहा, न वे बस्ती के लोग और न वह राजा। समय की गोद में नई पीढ़ी अवतरित हुई-नया राजा और नए पंच-नई पीढ़ी और नया खून। (ङ) पंचों ने इतने दिनों तक मुझसे भेद छिपाकर क्यों रखा? गड़ा धन तो राजा का ही होता है। उसके आदेश से पंचों को इक्कीस-इक्कीस जूतों की सज़ा मिली। (च) फिर राज्य के घुड़सवारों ने अपने घोड़े दौड़ाए, और किसान के घर में छुपाए हुए कलश तुरंत सरकारी खज़ाने के हवाले किए। **3.** (क) सरल और ईमानदार (ख) मन-ही-मन किसान पर नाराज़ हुआ (ग) किसान को मारने के लिए **4.** (क) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से लेखक ने प्राचीन काल के गाँव के लोगों के आपसी प्रेम-भाव और भाइचारे के भाव को दर्शाते हुए कहता है। उस समय सभी लोगों की आवश्यकताएँ कम थी तथा व धर्म के प्रति कर्त्तव्य करना जानते थे। (ख) अब नई पीढ़ियाँ के रहन-स्वभाव में काफी परिवर्तन आ गया है, लोगों की आवश्यकताएँ बढ़ गई है। फलत: लोग अधिक स्वार्थी हो गए हैं। स्वर्थ की पूर्ति हेतु वे अपना परामा भी नहीं समझते हैं। वे अपने पूर्वजों के समय के अधिकार के लिए भी आपस में लड़ने-मरने को तैयार हो जाते हैं। **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय–17. मशाल

1. (क) अग्नि पर विजय (ख) जिस दिन मशाल बनी। (ग) अब जब जहाँ अंधकार है, वहाँ वह पहले से भी ज़्यादा भयानक और वीभत्स है। मालूम होता है, बाहर का सभी अंधकार सिमटकर हमारे अंतरतम में डेरा डाले जा रहा है। कभी वहाँ एक टिम–टिम–सा दीख भी पड़ता था, लेकिन अब उसका अस्तित्व भी नहीं मालूम होता। हम आज आँख रहते भी अंधे हो चले हैं। अंधकार में टटोल रहे हैं, भटक रहे हैं। **2. (क)** अंधकार उसके लिए कितना बड़ा आतंक था। वही अंधकार, जब बाघ–सिंह दहाड़ेंगे, हाथी चिंघाड़ेंगे, अजगर फुफकारेंगे। फिर यदि उस अंधकार में कभी आँधी, तूफ़ान, झड़ी–वर्षा का सामना हो गया, तब तो उसके लिए मानो प्रलय की ही घड़ी आ पहुँची। कल्पना करो, वह उस समय कैसा थर–थर काँपता होगा, उसका छोटा–सा प्राण उसकी विशाल दानवी देह में किस तरह व्याकुल हो उठता होगा। **(ख)** उसने देखी होगी उषा की लालिमा। पक्षियों के कंठ–से–कंठ मिलाकर वह भी अभिनंदन कर उठा होगा। उसने देखा होगा दुपहरी का प्रकाश–पुंज किसी वृक्ष की छाया में बैठे वह एकटक उसे देखता और उसकी चकाचौंध से चमत्कृत होता रहा होगा। फिर, उसने देखी होगी संध्या की वही लालिमा, वही परीक्षायों का कलगान लेकिन इस लालिमा को देखते ही वह सहम उठा होगा। **(ग)** जिस दिन मशाल बनी। **(घ)** जेठ–बैसाख के प्रचंड सूर्य के ताप से तप्त, किसी घने वृक्ष की छाया में बैठा, वह अपनी जेठ की दुपहरी बिता रहा होगा–शरीर पसीने से नहाया, नसें ढीली पड़ीं, रह–रहकर आँखें झिप जातीं। लू की हवा में ऐसा लगता कि असंख्य गेहुँअन साँप फन उठाए चल रहे हों–वही रंग, वही परिणाम। गेहुँअन का काटा शायद बचे भी, किंतु इसका छुआ? फिर भला, इस बेचारे मानव को छाया के अलावा दूसरा चारा ही क्या रहा होगा? **3. (क)** ज्योति का **(ख)** जिस दिन मशाल बनी **(ग)** वृक्ष की छाया में **(घ)** आग लगने से **4. (क)** प्रस्तुत पंक्ति में लेखक कहता है कि प्रकाश का विजय क्षेत्र दिन–प्रतिदिन विस्तार पा रहा है, लेकिन, यह भी उतना ही सत्य है कि ज्यों–ज्यों अंधकार का क्षेत्र सीमित होता जा रहा है त्यों–त्यों वह सघन, सघनतर होता जाता है। **(ख)** प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक कहता है कि हम आज आँख रहते भी अंधे हो चले हैं। अंधकार में टटोल रहे हैं, भटक रहे हैं। चारों ओर शोषण, उत्पीड़न, मार–काट, खून–खराबा, तड़पन, छटपटाहट, आह–ऊह, चीख–पुकार! और, इसके बीच में हमारी रंगरेलियाँ, ये रासलीलाएँ, यह होलिकोत्सव, यह अट्टहास! मानव! मानव! सचमुच तू आँख रहते

अंधा हो चला है। अंधकार में भटक रहा है। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–18. गिरधर की कुंडलियाँ

1. (क) गुणी व्यक्ति को **(ख)** लोग उसे मूर्ख समझकर उसका हँसी उड़ाते हैं। **(ग)** दौलत हमेशा किसी के पास नहीं रहती। **(घ)** उससे कोई लाभ नहीं होता अपितु लोग उसे सोचकर व्यर्थ ही दुखित होते रहते हैं। **2. (क)** दोनों का रंग काला होते हुए भी कोयल को मीठी बोली के कारण पसंद किया जाता है। **(ख)** उसकी मीठी बोली को सभी पसंद करते है। **(ग)** गुणों के **(घ)** काम बिगड़ जाने का भय बना रहता है। **(ङ)** वह हमेशा किसी के पास नहीं ठहरती। **(च)** उसके बारे सोचकर मन दुखित होता रहता है। **3.** (क) काला (ख) दौलत को (ग) मीठे वचन (घ) बीती बात को **4.** (क) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि इस जग में कोई भी ठहर नहीं पाता। हमें जीवन काल में परोपकार करके यश प्राप्त कर लेना चाहिए। हम मीठे वचन से सबकी प्रशंसा करनी चाहिए। (ख) गिरधर कवि कहते हैं कि दौलत तो आती–जाती रहती है। यह एक अतिथि के समान है। यह हमेशा किसी के पास नहीं रहती। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–19. कर्तव्यपालन

1. (क) बदमाश (ख) शिकार करने (ग) 16 किमी **2.** (क) उसने वन में गोली चलने की आवाज सुनी थी। (ख) मैं राजा का दरबारी हूँ। (ग) जब राजा ने उसे इनाम देना चाहा। (घ) उसे राजा की ओर से जीवन भर के लिए प्रतिवर्ष एक हजार रूपये देने का आदेश दिया गया। **3.** (क) राजा (ख) ईमानदान (ग) प्रति वर्ष एक हज़ार रुपये। (घ) दरबारी **4.** (क) राजा ने, वनरक्षक से (ख) वनरक्षक ने राजा से (ग) दरबारी ने राजा से। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

मधुर हिंदी

Interactive Resources

- Download the free app 'Green Book House' from google play.
- Free online support available on 'www.greenbookhouse.com'.
- Ample teacher's support available.

GREEN BOOK HOUSE
(EDUCATIONAL PUBLISHER)
F-214, Laxmi Nagar, Mangal Bazar, Delhi-110092
Phone : 9354766041, 9354445227
E-mail : greenbookhouse214@gmail.com
Website: www.greenbookhouse.com